<u>प्रारूप (FYUGP, MODEL) प्रश्न एवं उत्तर</u>

पूर्णांक : 40 कोड :– अहिन्दी

समय : 2 घंटे

निर्देशानुसार सभी प्रश्नों के उत्तर दें।

उपांत के अंक पूर्णांक के द्योतक हैं।

परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में उत्तर दें।

खण्ड – 'क'

(वस्तुनिष्ठ,अनिवार्य)

प्रश्न 01 : सभी वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दें : 2 X 5 = 10

क) 'में' और 'पर' परसर्ग किस कारक के हैं ?

ख) 'उल्लास' का विच्छेद करें।

ग) 'यथासंभव' में कौन–सा समास है ?

घ) 'पर्यावरण' में कौन–सा उपसर्ग है ?

ङ) 'आत्मवत' में कौन–सा प्रत्यय है ?

(लघूत्तरीय प्रश्न)

प्रश्न 02 : निम्नलिखित में से *<u>दो</u>* लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर लिखें : 5 X 2 = 10

क) कारक के विभिन्न भेदों की चर्चा कीजिए।

ख) संधि की परिभाषा दें एवं भेदोल्लेख करें।

ग) ज्ञापन का एक उदाहरण प्रस्तुत करें।

खण्ड – 'ख'

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

प्रश्न 03 : निम्नलिखित में से किन्हीं *<u>दो</u>* प्रश्नों के उत्तर दें : 10 X 2 = 20

क) संधि और समास में उदाहरण सहित अंतर स्पष्ट करें।

ख) 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020' विषय पर निबंध लिखें।

ग) जिलाधिकारी के पास जल बहाव की रोकथाम के लिए पत्र लिखें।

खण्ड – 'क'

प्रश्न 01 : सभी वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दें :

क) अधिकरण

ख) उत् + लास

ग) अव्ययीभाव समास

घ) 'परि' उपसर्ग

ङ) 'वत्' प्रत्यय

प्रश्न 02 निम्नलिखित में से दो लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर लिखें :

क) कारक के विभिन्न भेदों की चर्चा कीजिए।

उत्तर :– कारक के विभिन्न भेद :

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य के अन्य शब्दों के साथ उसके सम्बन्ध का बोध होता है, उसे कारक कहते हैं। हिन्दी भाषा में कारक के आठ भेद हैं–

i)	कर्ता	–	0,ने
ii)	कर्म	–	0,को
iii)	करण	–	से, द्वारा
iv)	सम्प्रदान	–	को, के लिए
v)	अपादान	–	से (अलग होना)
vi)	सम्बन्ध	–	का, की, के, ना, नी, ने, रा, री, रे
vii)	अधिकरण	–	में, पर
viii)	संबोधन	–	हे! अरे! अजी

कारक के भेदों का परिचय :–

i) **कर्ता –** जिस शब्द रूप से क्रिया (कार्य) के करने वाले का बोध होता है वह कर्ता कारक कहलाता है। इसका विभक्ति–चिह्न 'ने' है। 'ने' चिह्न का प्रयोग वर्तमान और भविष्यतकाल में नहीं होता। इसका सकर्मक धातुओं के साथ भूतकाल में प्रयोग होता है–

राम ने रावण को मारा।

ii) **कर्म कारक –** क्रिया के कार्य का फल जिस पर पड़ता है, वह 'कर्म कारक' कहलाता है। इसका विभक्ति–चिन्ह 'को' है। जैसे– माँ ने बच्चे को दूध पिलाया।

iii) **करण कारक –** संज्ञा आदि शब्दों के जिस रूप से क्रिया के करने के साधन का बोध हो अर्थात् जिसकी सहायता से कार्य संपन्न हो वह करण कारक कहलाता है। इसका विभक्ति चिन्ह 'से' 'के' 'द्वारा' है। उदाहरण–

अर्जुन ने जयद्रथ को बाण से मारा

iv) **सम्प्रदान कारक –** प्रत्येक क्रिया किसी–न–किसी प्रयोजन से तथा किसी–न–किसी की हितपूर्ति के लिए की जाती है। जिसके लिए क्रिया की जाती है अथवा जिसे कुछ दिया जाता है वह संप्रदान कारक में होता है। संप्रदान के सूचक परसर्ग, को, के लिए तथा संबंध बोधक अव्यय के वास्ते, के हेतु आदि हैं। जैसे–

स्वास्थ्य के लिए सूर्य को नमस्कार करो।

v) **अपादान कारक –** अपादान कारक उस स्थिति की ओर इशारा करता है, जो क्रिया प्रारंभ होने के पूर्व थी और क्रिया के कारण जिससे अलगाव हुआ। जैसे–

पेड़ से पत्ता गिरा।

उपरोक्त वाक्य में पत्ता पहले पेड़ पर लगा था गिरना क्रिया से, उसका पेड़ से अलगाव हुआ।

vi) **सम्बन्ध कारक–** संबंध कारक संज्ञा या सर्वनाम से किसी संज्ञा का संबंध स्थापित करता है। इसमें संबंधवाचक रूप (का, की, के) लगता है। जैसे–

यह राम की पुस्तक है।

vii) **अधिकरण कारक –**प्रत्येक क्रिया किसी–न–किसी स्थान पर होती और किसी–न–किसी काल से संबद्ध होती है। इस स्थान संबंधी या काल संबंधी आधार को

अधिकरण कहते हैं। अधिकरण के सूचक परसर्ग, 'में', 'पर' तथा स्थान– कालवाची संबंध बोधक अव्यय, 'के ऊपर', 'के भीतर', 'के बाद', 'के पहले' आदि है। जैसे–

मेज पर/के ऊपर किताब रखी है।

viii) **संबोधन कारक–** यह ध्यान आकर्षित करते समय अथवा चेतावनी देते समय प्रयुक्त होता है। शब्द के पूर्व प्रायः विस्मायादि बोधक अव्यय हे! अरे! आदि लगते हैं, जैसे– अरे मोहन! यहाँ आना।

प्रश्न 02 ग) ज्ञापन का एक उदाहरण प्रस्तुत करें।

उत्तर : ज्ञापन का उदाहरण :

सं० 203/2/97/रा०भा० (ग)

भारत सरकार

गृह मंत्रालय

राजभाषा विभाग

लोकनायक भवन, नई दिल्ली, ता० 24 जुलाई, 1980

कार्यालय ज्ञापन

विषय :मानदेय के आधार पर अनुवाद कार्य करना।

इस विभाग के 24 फरवरी 1979 के कार्यालय ज्ञापन सं० 5–542/3/75 रा०भा० द्वारा यह निदेश दिया गया था कि जिन कार्यालयों में हिंदी अधिकारी या अनुवादक नियुक्त नहीं है वहाँ अनुवाद का काम कार्यालय के ही किसी योग्य व्यक्ति से मानदेय के आधार पर कराया जा सकता है। इस काम के लिए 1000 शब्दों के लिए 15.00 रुपये मानदेय निर्धारित किये गये थे।

2. ये आदेश इस कार्यालय ज्ञापन के जारी होने की तारीख से लागू होंगे।

3. यह कार्यालय ज्ञापन कार्मिक और प्रशासनिक सुधार विभाग की 30 जून 1978 की अंतर्विभागीय टिप्पणी सं० 25–12 (भत्ता) 1978 में दी गई सहमति से जारी किया जा रहा है।

.....

(क, ख, ग)

उप सचिव, भारत सरकार

प्रति,

सेवा में,

1. भारत सरकार के सभी मंत्रालय/विभाग
2. भारत सरकार के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक का कार्यालय
3. संघ लोक सेवा आयोग
4. गृह मंत्रालय और राजभाषा विभाग के सभी संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालय
5. राजभाषा विभाग के सभी डेस्क/अनुभाग

खण्ड – 'ख'

प्रश्न 3 निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दें :

क) संधि और समास में उदाहरण सहित अंतर स्पष्ट करें।

उत्तर :–

(क) संधि और समास में अंतर :

i) संधि दो वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार को कहते हैं जबकि समास दो पदों के मेल से बने शब्द होते हैं। उदाहरण–

क) सत् + जन = सज्जन (संधि)

ख) गंगा + जल = गंगाजल (समास)

उदाहरण 'क' में वर्णों के मेल से विकार की उत्पत्ति हुई है तथा उदाहरण 'ख' में दो भिन्न पदों के मिलने से नवीन शब्द की उत्पत्ति हुई है।

ii) संधि में वर्णों के योग से वर्ण परिवर्तन हो सकता है किंतु समास में नहीं होता।

उदाहरण–

क) जगन्नाथ = जगत् + नाथ (संधि)

ख) चंद्रमुंख = चंद्र + मुख (समास)

iii) संधि में जिस शब्दों का योग होता है उसका मूल अर्थ नहीं बदलता, जबकि समास में बने शब्दों का मूल अर्थ परिवर्तित हो जाता है। उदाहरण–

संधि – हिम + आलय = हिमालय

समास – वन + मानुष = वनमानुष

iv) संधि केवल तत्सम पदों में होती है जबकि समास संस्कृत, हिंदी, उर्दू आदि भाषाओं के पद में भी संभव है। उदाहरण –

संधि – पुनर्जन्म = पुनः + जन्म

समास – रेलगाड़ी = रेल + गाड़ी

v) संधि में विभक्ति या शब्द का लोप नहीं होता किंतु समास में विभक्ति या पद का लोप हो सकता है। जैसे–

संधि – इति + आदि = इत्यादि

समास – राजकुमार = राजा का कुमार (बेटा) इत्यादि

प्रश्न 3.ग) जिलाधिकारी के पास जल बहाव की रोकथाम के लिए पत्र लिखें।

उत्तर : जिलाधिकारी के पास पत्र :

सेवा में,

जिलाधिकारी महोदय,

हजारीबाग, झारखण्ड।

विषय :– जल बहाव की रोकथाम हेतु।

महाशय,

निवेदन पूर्वक कहना है कि मैं हजारीबाग जिले के विष्णुगढ़ प्रखण्ड मुख्यालय का निवासी हूँ। विष्णुगढ़ की ग्रामीण सड़कों पर नालियों की कोई व्यवस्था नहीं है। लोग अपने घरों में प्रयोग किए गये पानी को सीधे सड़कों पर निकाल देते हैं। पनसोखे की कोई व्यवस्था नहीं होने के कारण घरों का पानी सड़कों पर बहता रहता है। सड़कों में यत्र–तत्र बड़े–बड़े गड्ढे हैं जिनमें घरों से निकला गंदा पानी भर जाता है। यह मच्छरों का उत्तम बसेरा बन गया है। आए दिन मलेरिया, हैजा, जैसी बीमारियाँ फैलती रहती हैं। घरों से बाहर निकलना बीमारी को दावत देना है। स्थानीय प्रशासन को इस बावत कई दफा अवगत कराया गया है मगर कोई निदान नहीं निकल सका है।

अतः श्रीमान् से करबद्ध प्रार्थना है कि हमारी शिकायत को गंभीरता से लेकर इस पर त्वरित कार्रवाई कर हमें एक स्वस्थ और स्वच्छ माहौल प्रदान करने तथा अप्रत्याशित बीमारियों से बचाने की कृपा करें।

इसके लिए मैं सदा आपका आभारी रहूँगा।

सधन्यवाद!

क ख ग

अखाड़ा चौक,

विष्णुगढ़